फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर **163** जनवरी **2002**

## सबक

हड़ताल खत्म होने के बाद एस्कोर्ट्स में बड़े साहब प्लान्ट-प्लान्ट जा कर 8-10 मजदूरों को बुला कर हड़ताल पर चर्चा कर रहे हैं। मैनेजमेन्ट से सीखना कैसा रहेगा ?

# बातें ... ज्यादा बातें ... लेकिन कौनसी बातें ?

ड्युटी पूरी होने पर फैक्ट्री से निकली। महीने के हिसाब से किराये पर किये आटो में बैठी। रोज की तरह बातें शुरू, खूब बातें। लालबत्ती पर आटो रुकी। एक कार टक्कर मार कर निकल गई। आटो पलट गई। एक बार तो सब बेहोश हो गई पर ठहरी हुई आटो थी इसलिये बड़ा हादसा नहीं हुआ। जिन्हें कम चोट लगी थी वे होशो- हवास में आते ही एक-एक करके अन्य आटो पकड़ कर अपने-अपने घर चल दी। घर पहुँचने के बाद भी पड़ोस में रहने वालियों के घरवालों को खबर नहीं की। जिनके ज्यादा चोट लगी थी और बेहोश थी उन्हें आटो ड्राइवरों ने अस्पताल पहुँचाया।

**खूब बातें करते हैं लेकिन कुछ भी बात नहीं करते** , टाइम पास करते हैं का यह एक उदाहरण मात्र है।

— हम 7-8 लड़कियाँ इक्ट्ठी बैठती हैं। बहुत बातें करती हैं : अपनी सहेलियों की, अपने घर की, अपने दोस्तों की। खूब चुटकुले सुनाती हैं। शेरो-शायरी करती हैं। फैशन की बातें करती हैं। कभी-कभी किसी की बुराई करती हैं। कभी फिल्मों के बारे में चर्चा छिड़ती है तो सारी लड़कियाँ इस-उस फिल्म की बातें करती हैं। कभी छेड़खानी की बातें होती हैं तो सारी लड़कियाँ खूब गालियाँ देती हैं। सँसार के बारे में बातें होती हैं। कैसे-कैसे लोग हैं। गरीब-दुखी को देख कर : काश हमारे पास कुछ होता उन्हें देने के लिये। कम्पनियों की बातें होती हैं। मैनेजमेन्टों को गालियाँ देती हैं और मैनेजरों-सुपरवाइजरों के नाम रखती हैं। घर की समस्याओं, पड़ोसियों से परेशानियाँ, पानी भरने में झँझट, नाली का चक्कर, गली में कूड़े पर लड़ाई की बातें। बच्चों के बारे में, अपने बचपने की मस्ती, विद्यार्थी जीवन की शरारतों के किस्से। आपस में खूब बातें करती हैं हम।

— दसवीं में थे तब पूरे-पूरे दिन स्कूल में बैठे रहने से मन ऊब जाता था और आगे पढेंगे नहीं, कोई कोर्स कर लेंगे की बातें करते थे। अब 12 वीं में हम भविष्य की बातें करते हैं। खाने-पीने की, खेल की बातें करते हैं और हँसते बहुत हैं हम। बोर्ड परीक्षा तक कोर्स की किताबों की ही चर्चा। लड़कियों के बारे में बातें सिर्फ टाइम पास के लिये करते हैं — संग घूमने के लिये, शादी की बातें बहुत कम। दरअसल, लोग बातें कम करते हैं। अपनी बातें छुपाते हैं। एक-दूसरे से ईर्ष्या के कारण अपनी बातें पूरी तरह खुल कर नहीं कहते। ज्यादा बातें बाहरी दिखावे की करते हैं। सामान की बातें : टी वी है, फ्रिज है... मकान की बातें : इतना बड़ा... नौकरी की बातें : मोटी तनखा, बड़ी कम्पनी, कुर्सी पर बैठने का काम, साफ काम...। मोहल्ले-पड़ोस की बातों में एक-दूसरे की बुराई की बातों की ही ज्यादा चर्चायें होती हैं। मोहल्ले-भर में दूसरों की घरेलू बातें करते हैं। आपस में तनाव रहते हैं। पानी भरने पर ही लड़ाई हो जाती है।

— लोग अपने-अपने सर्कल में ही बातें करते हैं। सब से सब बात भी नहीं करते। हिसाब से बात करते हैं। लगता है कि रेखांकित किये रहते हैं कि इससे इतनी अथवा यह बातें ही करनी हैं। कुछ तो यह संस्कार की वजह से है और कुछ त्रुटि निकाले जाने व कुछ कह दिये जाने के भय की वजह से। अपने भाई तक से आई विपत्त को छिपाया जाता है अथवा चालाकी से कुछ लेने के लिये बढा-चढा कर बताया जाता है तो अन्य से...। हाल-चाल "ठीक है" कहने की परिपाटी है। अन्य की तुलना में अपनी स्थिति को बेहतर बताने का भी रिवाज-सा बन गया है। अपनी कमी तो कोई बताता ही नहीं। इस-उस कारण से यह हो गया, "मैंने" तो कोई कमी नहीं छोड़ी। अपने दुष्कर्मो का जिक्र ही नहीं किया जाता और जिक्र आ ही जाता है तो इन-उन हालात का हवाला दे कर अपने दुष्कर्मो को जायज ठहराते हैं। भले ही कितना ही छिपा कर की जाती हों, ज्यादातर बातें निजी से आरम्भ होती हैं, फिर बेशक समाज की बातें आ जायें। नेता-किस्म के लोग तो अपनी बात कभी नहीं करते, अपनी निजी बातें नहीं करते, वे तो सीधे समाज की, राजनीति की बातें करते हैं। निजी में घर-परिवार की बातें आती हैं, मोहल्ले की नहीं। घर-परिवार की बातों को अधिक उम्र वाले तो बेटा-बेटी-बहु की बातों से शुरू करते है। ज्यादातर 50-60 वर्ष आयु वाले परिवार में तँग हैं, अपने बच्चों की बुराई करते हैं।

— कटाक्ष ज्यादा होते हैं, एक-दूसरे को नीचा दिखाने वाली बातें अधिक होती हैं। सही कहना नहीं, छिपाना, हेरा-फेरी से बात करने का चलन हो गया है। दूसरों को उन्नीस और अपने को इक्कीस दिखाने वाली बातों का बोलबाला है। दिखावा वाली, दिखावटी बातें अधिक होती हैं — रिश्तेदारी में तो यह बहुत-ही ज्यादा हो गई हैं। चुगली करना आम बात हो गई है। रेडियो-टी वी-अखबार में जो बातें होती हैं उन्हें ही दिन-भर दोहराने का सिलसिला चल पड़ा है।

— हमारे हिसाब से तो लोग आपस में कम बातें करते हैं क्योंकि मतलब से बातें करते हैं, जिनसे कोई मतलब निकले वो बातें करते हैं। प्रेम-व्यवहार आजकल है नहीं। यह इसलिये कि जमाने के हिसाब से आजकल लोग सिर्फ अपना मतलब सोचते हैं। रेडियो में सुन कर, टी वी में देख कर, सिनेमा देख कर, टेलिफोन से लोग ज्यादा चालाक हो गये हैं।

— फालतू की बातें समस्या बन गई हैं। इतनी ज्यादा बातें होती हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता। छँटाई नहीं करेंगे तो वर्तमान व्यवस्था की पोषक बातों के दलदल में डूब जायेंगे। **एक-दूसरे के दुख-दर्द को , परेशानियों को, दिक्कतों को सुनना और सुनाना से आरम्भ करना बनता है। अपनी तकलीफों को कम करने के लिये क्या-क्या कर सकते हैं पर चर्चायें केन्द्रित करना प्रस्थान-बिन्दू लगता है।** (जारी)■

## चिकित्सक

न्युजीलैण्ड के एक तिहाई डॉक्टर मानसिक रोगी हैं। दस प्रतिशत डॉक्टरों को तो खतरनाक मानसिक बीमारियाँ हैं। ज्यादा काम तथा जिम्मेदारियों के दबाव से उपजते तनाव का यह एक परिणाम है। वेलिंग्टन स्कूल ऑफ मेडिसन द्वारा किये गये अध्ययन में 441 फिजिशियनों, 330 सर्जनों और 400 फार्मासिस्टों को शामिल किया गया था।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

# कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

**कानून हैं** – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 1984 रुपये 92 पैसे , अर्ध- कुशल (क) को 2034 रुपये 92 पैसे , अर्ध- कुशल (ख) को 2059 रुपये 92 पैसे , उच्च कुशल मजदूर को 2184 रुपये 92 पैसे कम से कम ; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले ; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर , आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट ; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना , तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं , ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से ; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड , मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना , हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना ; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई. ; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ; ●परमानेन्ट- कैजुअल- ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को एक जैसे काम के लिये समान , बराबर वेतन ;● ....

**भोगल्स फुटवीयर मजदूर :** "26 डी एल एफ स्थित फैक्ट्री में नवम्बर का वेतन हमें आज 18 दिसम्बर तक नहीं दिया है। अक्टूबर की तनखा 3 दिसम्बर को जा कर दी।"

**हिन्द हाइड्रोलिक्स वरकर :** "प्लॉट 13 सैक्टर–24 स्थित फैक्ट्री में मासिक तनखा पर 7- 8 मजदूर ही रखे हैं , बाकी सब को घण्टे के हिसाब से पैसे देते हैं। हैल्परों को 5 या 6 रुपये घण्टा , वैल्डरों को 8 , साढे आठ , 10 रुपये घण्टा। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। लन्च के समय हमें फैक्ट्री से बाहर नहीं जाने देते। कोरे कागज पर हम से हस्ताक्षर पहले ही जबरदस्ती करके करवा लेते हैं।"

**नूकेम मजदूर :** "मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में क्रिस्टल वाटर लेबल से बिकने वाले पानी का उत्पादन होता है। ठेकेदार के जरिये हम 24 को हैल्परों के तौर पर रखा है , 8 वरकर प्रति शिफ्ट। हमें मात्र 1500 रुपये महीना देते हैं।"

**सुपर स्विच वरकरें :** "प्लॉट 5 सैक्टर–6 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर का वेतन आज 22 दिसम्बर तक हमें नहीं दिया है।"

**हैमर फोर्ज मजदूर :** "प्लॉट 28 सैक्टर–4 स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. कार्ड माँगने पर मैनेजमेन्ट ने 9 मजदूरों को गेट बाहर कर दिया है। हैल्परों को 1400 रुपये महीना तनखा देते हैं। दो साल से बोनस देना बन्द कर दिया है।"

**आटोलैम्प वरकर :** "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हमें सितम्बर , अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी हैं। पैसे नहीं हैं कह कर 100- 200 रुपये एडवान्स लेने को कहते हैं।"

**ट्रैक्टल टिरफोर मजदूर :** "नवम्बर की तनखा आज 18 दिसम्बर तक नहीं दी है। हम वेतन माँगते हैं तो कहते हैं कि जब पैसा होगा तब देंगे , काम बन्द करना है तो बन्द कर दो।"

**शिवालिक प्रिन्ट वरकर :** "प्लॉट 84 सैक्टर–6 स्थित फैक्ट्री में हमें 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड हमें नहीं दिये हैं और हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड भी नहीं है।"

**खेमका इस्पात मजदूर :** "प्लॉट 111 सैक्टर–59 स्थित फैक्ट्री में 10 वरकर परमानेन्ट हैं और 60 को कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये रखा है। ठेकेदारों के जरिये रखे हम 60 में से 10 का पी.एफ. और ई.एस.आई. काटते हैं। ई.एस.आई. कार्ड हम 60 में से किसी को नहीं दिये हैं और फण्ड की पर्ची भी किसी को नहीं दी है।"

**रोलन पैकेजिंग वरकर :** "सैक्टर–4 स्थित फैक्ट्री में हम 75 मजदूर काम करते हैं। नवम्बर का वेतन हमें आज 22 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

**सहरावत इंजिनियरिंग मजदूर :** "प्लॉट 35 सैक्टर–25 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर का वेतन हमें आज 14 दिसम्बर तक नहीं दिया है। हैल्परों को 1000- 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। हैल्परों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं – पहले दिये थे , यूनियन ने सब खत्म करवा दिये।"

**फर आटो वरकर :** "मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें हमें आज 22 दिसम्बर तक नहीं दी हैं – 4 वरकरों को तो सितम्बर की तनखा भी नहीं दी है। बड़ा साहब हर बात पर हाँ कर लेता है और कल दें गे कह देता है लेकिन उसका कल कभी आता ही नहीं। कल, कल करके 4 महीनों का साबुन नहीं दिया है। कल, कल करके कैन्टीन ठेकेदार की पेमेन्ट नहीं की है और परिणामस्वरूप 4 महीनों से फैक्ट्री में हमारी चाय बन्द है। कल , कल करके एग्रीमेन्ट के 200 रुपये वाला एरियर नहीं दिया है। और , बोनस का समझौता किया 12.66 का पर दिया 8.33 प्रतिशत।"

**रेवा मजदूर :** "सैक्टर–25 स्थित फैक्ट्री में हमें डी.ए. नहीं देते – कहते हैं कि इस बारे में हैड आफिस से सरक्युलर नहीं आया है। कम्पनी की फैक्ट्री ओखला फेज–1 में भी है।"

**सुपर फाइबर लिमिटेड मजदूर :** "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में साढे दस घण्टे की शिफ्ट है और दो शिफ्ट हैं , बाकी का समय मशीनों के रैस्ट के लिये है। फैक्ट्री में 1200 मजदूर होंगे जिनमें से 200 ही परमानेन्ट हैं। एक हजार वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं और पी.एफ. भी नहीं है। बहुत गन्दा काम है, गर्दा बहुत उठता है। मास्क की तो बात ही क्या कम्पनी मुँह पर बाँधने के लिये कपड़ा तक नहीं देती। खाँसी- जुकाम और टी.बी. आम बात हैं। आमतौर पर किसी को निकालते नहीं हैं , चार- पाँच महीने में बीमारी ले कर अधिकतर मजदूर खुद ही नौकरी छोड़ कर चले जाते हैं। नये लोग भर्ती होते रहते हैं।"

**बोल्ट टाइट वरकर :** "प्लॉट 143 सैक्टर–4 स्थित फैक्ट्री में रबड़ का काम है , बहुत गन्दा काम है। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड भी नहीं है। हैल्पर हो, ऑपरेटर हो , सब को सूखे 1915 रुपये महीना देते हैं।"

**पी.के. कास्टिंग मजदूर :** "प्लॉट 303 सैक्ट–24 स्थित फैक्ट्री में वेतन 250- 300 करके कई बार में जा कर देते हैं। जिन वरकरों ने नौकरी छोड़ी है उन्हें हिसाब नहीं दिया है। कम्पनी ने 1997 से हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं किया है।।"

**रानी इलेक्ट्रोनिक्स वरकर :** "प्लॉट 21- 22 सैक्टर–4 में बोर्ड तो गुण्टूर इंजिनियरिंग का भी लगा है पर इसे रानी इलेक्ट्रोनिक्स के नाम से जाना जाता है। स्टाफ को कई महीनों से वेतन नहीं दिया है और अब हम मजदूरों की तनखा भी रोकने लगे हैं।"

सड़कें कत्लगाह हैं।

## मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट- बोल्ट होते हैं ; नालियाँ- सीवर होते हैं ; कई- कई ऑपरेशन होते हैं ; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो ; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ✱ बिजली कभी कड़के , कभी दमके , कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये ; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के , शान्त मन से , ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

# दलदल है मण्डी

**फील्ड वरकर :** " मार्केट में बहुत मन्दी है। बिना उधार के कोई धन्धा चलता नहीं और वसूली में ऐसी-ऐसी दिक्कतें हैं कि क्या कहें। हम फील्ड वरकरों की आजकल बहुत-ही दुर्गत हो रही है। वसूली के लिये हमें गरमी-नरमी वाले कई हथकन्डे अपनाने पड़ते हैं – हमें बुरा-भला कहना पड़ता है और बुरा-भला सुनना पड़ता है। कई फैक्ट्रियों के डायरेक्टर तो हमें कह देते हैं, 'तुम्हें क्या, तुम तो तनखा पर हो, तुम क्यों टें-टें कर रहे हो।' जबकि, दिन-भर की झिक-झिक और भागमभाग के बाद नेहरू ग्राउण्ड लौटते ही हमें जली-कटी सुननी पड़ती हैं: 'सौ रुपये का पैट्रोल फूँक आया, पैसा एक नही लाया तनखा कहाँ से दें तुझे।'

" फील्ड वरकर क्या करें ? रोज-रोज की डाँटें और नौकरी से निकाल दिये जाने की धमकियाँ हमें बेहाल किये रहती हैं। ऐसे में आज तो एक फील्ड वरकर सैक्टर–59 में आटो इण्डिया फैक्ट्री गेट पर चिल्लाया कि मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा देगा। आटो इण्डिया में मजदूरों को 3-4 महीनों से तनखायें नहीं दी हैं और बीसियों सप्लायरों के फील्ड वरकर भी वहाँ चक्कर पर चक्कर लगा रहे हैं। दरअसल, अब मरने-मारने पर उतारू करने वालों की कमी नहीं रही।" ■

# और बातें यह भी

**गवर्नमेन्ट प्रेस मजदूर :** " बचपन के कुछ संगी-साथी बाबू-अफसर बन गये हैं फिर भी हर समय निन्यानवे के चक्कर में लगे रहते हैं। इन से मिलने जाओ तो यह अनमनेपन से मिलते हैं क्योंकि इनके पास 'समय नहीं है'। साहबों को निमन्त्रण दो तो सब का एक ही उत्तर रहता है: 'किसी से मिलने, बैठ कर बातें करने, किसी के पास जाने के लिये समय ही नहीं है।' दरअसल, पैसा-हाय पैसा के फेर में साहबों के पास उठ-बैठ के लिये समय नहीं रहता। क्या जिन्दगी है इनकी ? मैं तो नौकरी को मजबूरी मान कर करता हूँ और ड्युटी के बाद कोई धन्धा नहीं करता। इसलिये ड्युटी के बाद मिलने-बैठने के लिये मैं समय निकाल लेता हूँ। मेल-मिलाप के लिये मैं जब-तब छुट्टी भी कर लेता हूँ। दाल ही तो पतली करनी पड़ती है – अपने में इन्सानियत जिन्दा है।"

**प्रणव विकास वरकर :** " 45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये सेक्युरिटी स्टाफ रखा है। हम गार्डों से 2700 रुपये महीना तनखा पर रजिस्टर में टिकट पर हस्ताक्षर करवाते हैं पर देते हमें 1915 रुपये ही हैं। ठेकेदार दिल्ली की इलाइट कम्पनी है।"

**सी.एम.आई. मजदूर :** " जुलाई 2001 से देय डी.ए. के पैसे कम्पनी ने नहीं दिये हैं। अटेन्डेन्स और दूध अलाउन्स खत्म कर दिये हैं और साबुन व वर्दी अलाउन्सों में कटौती कर दी है। फैक्ट्री में वर्क्स कमेटी है और उसमें एक बन्दा है जो सही व खरी बातें करता है। इस बन्दे को मैनेजमेन्ट ने पागल करार दिया है और इसे मीटिंग में नहीं बैठने देती।"

# मीठी-महीन छुरियाँ

**कास्ट मास्टर वरकर :** " डायरेक्टरों का रुख एकदम बदल गया है। डाँट-फटकार का रवैया बन्द कर दिया है, दण्ड देना बन्द कर दिया है। अब आरोपी मजदूर को अकेले में अपने कमरे में बुलाते हैं। कम्पनी से मजदूर की रोटी जुड़ी होने की बातें डायरेक्टर करते हैं, कम्पनी के नुकसान को डायरेक्टर लोग मजदूरों का नुकसान बताते हैं। मजदूर में गलती की-गलत किया की भावना को, अपराधबोध को उभारने की साहब लोग बहुत कोशिश करते हैं।

" अब सब डायरेक्टर मण्डी की बात करते हैं। मार्केट की माँग बढिया क्वालिटी और सस्ता भाव बताते हैं। मैनुअल की जगह आटोमैटिक मशीनें लगा दी हैं और कहते हैं कि माल खराब होने पर पूर्ण रोक लगाओ। आटोमैटिक मशीनों ने हर क्षण हमें बन्धक बना कर उत्पादन बहुत बढा दिया है और क्वालिटी के फेर ने हमारा इनसैन्टिव आधा कर दिया है। कम्पनी को हमारा परिवार बताते डायरेक्टर इस सब को कम्पनी को बचाने-बढाने के लिये जरूरी कहते हैं।

" पिघली हुई धातु का काम है। चोट लगने और जलने का बहुत खतरा रहता है। एक्सीडेन्ट से उत्पादन पर असर पड़ता है और कम्पनी पर खर्चा भी पड़ता है क्योंकि बरसों से काम कर रहे 250 मजदूरों को कम्पनी कैजुअल कहती है तथा उन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। एक्सीडेन्ट होने पर परमानेन्टों को तो छुट्टी ही देनी पड़ती है, कैजुअलों का छुट्टी के संग-संग प्रायवेट इलाज भी करवाना पड़ता है। इसलिये एक डायरेक्टर हमारे भले का नाम ले कर हैल्मेट व चश्मे हम पर लादने के लिये हमारे पीछे पड़ा है।

"कम्पनी को हमारा परिवार बताते डायरेक्टर अघाते नहीं हैं। लेकिन परमानेन्ट हो चाहे कैजुअल, ओवर टाइम काम की पेमेन्ट कानून अनुसार डबल देने की बजाय सवा की दर से देते हैं। कैजुअल वरकरों का प्रोविडेन्ट फण्ड भी नहीं है। हाँ, ब्याह-शादी के समय गन्दी बस्ती में जा कर साहब मुख्य अतिथि बनने लगे हैं। अपने संग फोटो खिंचवा कर मजदूर के परिवार को अपनी जहरीली जकड़ में लेने में कास्ट मास्टर का एग्जेक्युटिव डायरेक्टर विशेष शोहरत हासिल कर रहा है।" ■


**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,**
**आटोपिन झुग्गी,**
**एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001**


# पैसे मेरे , कर्ज तेरा

**आर.आर. आटोमोटिव मजदूर :** " कुछ समय से प्लॉट 89 सैक्टर–24 स्थित फैक्ट्री से कम्पनी ने **एक-एक करके हमें एक बैंक ले जाना शुरू किया हुआ है। बैंक में एक खिड़की पर एक फाइल में चार-पाँच जगह हस्ताक्षर करवाते हैं और दूसरी खिड़की पर चेक दे देते हैं जिसे संग गया मैनेजमेन्ट का आदमी वहीं ले लेता है। फाइल पहले से तैयार रहती है और बैंक का सारा काम-काज अंग्रेजी में होता है इसलिये हमें ठीक से पता नहीं कि यह सब क्या है। लेकिन इतना तो साफ है कि यह वरकर के नाम पर कर्ज लेना है। कर्ज मजदूर के नाम पर और पैसे कम्पनी ले लेती है ! दो लोगों ने बैंक जाने से इनकार कर दिया तो मैनेजमेन्ट ने उनका गेट रोक दिया। बैंक के साथ मिल कर कम्पनी यह घपला स्टाफ और परमानेन्ट मजदूरों के संग-संग कैजुअलों के साथ भी कर रही है।** फैक्ट्री में छोटे-बड़े स्टाफ के 30, परमानेन्ट वरकर 65, कैजुअल 30-35 और 16 ठेकेदार हैं जिनके जरिये 80-90 वरकर रखे हैं। कैजुअलों और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं, पी.एफ. की पर्चियाँ भी नहीं और 1500-1800 रुपये महीना तनखा देते हैं। आर.आर. की फैक्ट्रियाँ प्लॉट 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया तथा प्लॉट 310 सैक्टर–24 में भी हैं।" ■

# खत

. . . बड़ी इच्छा होती थी कि छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर तथा मजदूर सेन्टर भिलाई का भी समाचार क्यों न प्रकाशनार्थ भेजा करें। . . . सम्पादकीय टिप्पणी न देखने से संकोच होता था कि पता नहीं पत्र की नीति क्या है। केवल मजदूरों का समाचार जो फरीदाबाद के हैं उन्हीं के लिये समर्पित है अखबार अथवा मजदूर वर्ग के लिये भी गुँजाइश है पत्र में ? यह जानते हुये भी कि मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता, प्रदेश नहीं होता, नगर नहीं होता, शहर नहीं होता। मजदूर जहाँ रहता है, श्रम करता है वहीं उसका घर होता है, वहीं प्रदेश और देश भी होता है। फरीदाबाद के मजदूरों पर भी यही बात लागू होती है। मजदूरों के जो समाचार आपके पत्र में छपते हैं वे भले ही स्थानीय होते हैं पर उनका चरित्र देशव्यापी और सर्वत्रव्यापी है। रायपुर, भिलाई में भी वही हाल है जो कि फरीदाबाद का है। . . . श्रम और पूँजी के बीच का संघर्ष विश्वव्यापी है . . . किन्तु मजदूर वर्ग स्वतः पूँजीवादी मनोवृति का शिकार है। वह जाने-अनजाने में पूँजीवाद को मिटाने को कौन कहे, वह पूँजीवाद को अपना खून दे कर उसका समर्थक बना है। यह करामात तमाम कथित स्वयंभू चन्दाखोर पेशेवर मजदूर यूनियनों के नेताओं की बदौलत है ....

– राजीव कुमार, रायपुर

# ... तरीके... राहें...

प्लॉट 74 व 75 सैक्टर–6 स्थित **टालब्रोस इंजिनियरिंग** के दो प्लान्टों के परमानेन्ट वरकर 27 अक्टूबर से फैक्ट्री बाहर हैं, कैजुअलों को कम्पनी ने 18 अक्टूबर के झटके के वक्त ही निकाल दिया था। मथुरा रोड़ स्थित **भारतीय कटलर हैमर** के सब स्थाई मजदूर (पाँच- सात को छोड़ कर) 5 नवम्बर से फैक्ट्री के बाहर हैं। सैक्टर–24 स्थित **एस्कोर्ट्स रेलवे इक्विपमेन्ट डिविजन** के मजदूर 23 नवम्बर से फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। टालब्रोस और कटलर हैमर में स्टाफ तथा कुछ नये लोगों के जरिये छुटपुट- नाममात्र- दिखावे के लिये उत्पादन हो रहा है जबकि एस्कोर्ट्स रेलवे में प्रोडक्शन पूरी तरह बन्द है।

मजदूरों में लगभग पूर्ण एकता है और उत्पादन बन्द को भी काफी दिन हो गये हैं लेकिन बात बन नहीं रही। उल्टे, पुलिस केस आदि से मजदूरों की परेशानियाँ बढ रही हैं। श्रम विभाग और अदालतों में तारीखें, डी सी तथा मुख्यमन्त्री को ज्ञापन और पूजा- अर्चना- जागरण तात्कालिक राहत का दिखावा तक नहीं बन पा रहे। **कम्पनियों से निपटने के लिये क्या तरीके अपनायें ? कौन-सी राहें पकड़ें ?**

यहाँ चर्चा के लिये हम सिर्फ एक पहलू लेंगे : उत्पादन रोकने का असर।

एक शताब्दी हो गई है हड़तालों और तालाबन्दियों को गडमड होते। अब तो हालत यह हो गई है कि स्ट्राइक और लॉक आउट में फर्क करना बाल की खाल निकालने के समान हो गया है। सितम्बर 1996 से तालाबन्दी के शिकार ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल का कोई मजदूर अपने को हड़ताली कहता है तो उसे अज्ञानी कह कर उसकी बातों को उड़ा देना कड़वी सच्चाई से मुँह मोड़ना है।

इन चार- पाँच वर्षों में ही और फरीदाबाद में ही : कमला सिनटैक्स में उत्पादन स्थगित, रेमिंग्टन में प्रोडक्शन सस्पेन्ड, हितकारी पोट्रीज में उत्पादन निलम्बित, सपना- सोभाग टैक्सटाइल्स में सस्पेन्शन ऑफ ऑपरेशन्स, ईस्ट इण्डिया में तालाबन्दी आदि- आदि के नाम से बरसों से प्रोडक्शन बन्द है – मैनेजमेन्टों ने उत्पादन बन्द किया है। और, बाटा में आठ महीने तालाबन्दी, उषा टेलिहोइस्ट में पाँच महीने की तालाबन्दी- हड़ताल, जी के एन ड्राइवशाफ्ट में 2 महीने हड़ताल, सुपर ऑयल सील में 2 महीने हड़ताल, एस्कोर्ट्स ग्रुप में 40 दिन टूल डाउन स्ट्राइक, एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट में 83 दिन की हड़ताल, एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक में 59 दिन की हड़ताल, एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट तथा एस्कोर्ट्स सी एच डी में मैनेजमेन्ट ने 83 दिन काम नहीं दिया.....

दरअसल, उत्पादन क्षमता से कम उत्पादन करना आज उत्पादन प्रक्रिया की एक सामान्य क्रिया बन गई है। ऐसे में दीर्घकाल तक उत्पादन रोकने का परिणाम आमतौर पर अब मजदूरों को नुकसान, भारी नुकसान होता है। अक्सर बड़े हमले करने के समय तो खासकरके, कम्पनियाँ प्रोडक्शन बन्द करने को एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करती हैं। साँठगाँठ से अथवा उकसा कर हड़ताल करवाना, तालाबन्दी की ही तरह, आज मैनेजमेन्टों के हाथों में एक धारदार औजार है।

"फँस गये हैं" अथवा "फँसा दिये गये हैं" का अहसास होने पर हाथ पर हाथ धरे कटने का इन्तजार करने या छाती पीटने की बजाय नुकसान को कम करने के तरीकों पर विचार कर कदम उठाना बनता है। इसके लिये जो मुद्दे होते हैं उन्हें स्पष्ट करना प्रथम आवश्यकता है। मुद्दों की चर्चा पर यह कहना कि मुद्दा कोई नहीं है, बस नाक का सवाल है, दरअसल मुद्दों को छिपाने के प्रयासों का अंग होता है। कम्पनियों के नाक- वाक होती ही नहीं। और फिर, नाक वाले लोग साहब या नेता नहीं बनते।

जिनका धन्धा है पराजयों को विजय बताना, उनकी जीतों का सिलसिला हमें इतने गर्त में ले आया है। महान संघर्षों और महान पराजयों के सिलसिले पर पूर्ण विराम लगाना जरूरी है। अधिक महत्वपूर्ण है उन तरीकों तथा राहों पर व्यापक चर्चायें करना जिनसे हम सहजता से, सरलता से, आसानी से कम्पनियों की नाक में दम कर सकें।■

## मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

# ओखला से

**भारतीया इन्डस्ट्रीज मजदूर :** "बी–128 ओखला फेज–1 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर का वेतन हमें आज 14 दिसम्बर तक नहीं दिया है। साल- भर के महँगाई भत्ते का एरियर कम्पनी ने हमें नहीं दिया है और डी.ए. की राशि भी हमारे वेतन में शामिल नहीं की है, वाउचर पर देना शुरू किया है। हैल्परों को तो मात्र 50 रुपये की दिहाड़ी देते हैं, दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी आधे पैसे देते हैं। हैल्परों को कम्पनी साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं देती।"

**शारदा मोटर इम्पलाइज यूनियन के** 8.12.2001 **के पत्र के आधार पर :** बी–238 ओखला फेज–1 स्थित शारदा मोटर इन्डस्ट्रीज लिमिटेड की फैक्ट्री 15 वर्ष से कार्यरत है और यहाँ यूनियन को भी 10 वर्ष हो गये हैं। कुछ समय से यूनियन को पूर्ण रूप से सन्देह हो गया था कि प्रबन्धन कर्मचारियों की छँटनी करना चाहती है। इस सन्दर्भ में एक सिलसिला- सा चला लगता है। यूनियन ने 1998 में हुये दीर्घकालीन समझौते को ढाई वर्ष बीत जाने पर भी कम्पनी द्वारा पूर्ण रूप से लागू नहीं किये जाने की शिकायत श्रम विभाग में की। इस पर मैनेजमेन्ट ने 25.8.2001 को नोटिस लगाया कि 17 सितम्बर से फैक्ट्री में सुबह 6 बजे से ढाई बजे, शाम 3 बजे से रात साढे ग्यारह बजे और 9 से साढे पाँच की शिफ्टें होंगी। जबकि, 15 वर्ष से फैक्ट्री में एक ही शिफ्ट रही है। और फिर, जहाँ कहीं सर्दी- गर्मी के हिसाब से शिफ्ट- समय बदले जाते हैं वहाँ यह शारदा मोटर के तरीके के पूर्णतः विपरीत होता है। कई मजदूर (जिनमें कुछ महिलायें भी हैं) दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करने पलवल, गाजियाबाद, गुड़गाँव, बहादुरगढ़ से आते हैं। कम्पनी ने ट्रान्सपोर्ट का कोई प्रबन्ध नहीं किया है और बरसों से मजदूर ट्रेनों- बसों में धक्के खाते फैक्ट्री पहुँचते रहे हैं। नई समय सारिणी का नोटिस लगाते समय किसी यातायात प्रबन्ध का ऐलान कम्पनी ने नहीं किया। सर्दियों में तो खासकरके, सुबह 6 बजे ओखला फेज–1 पहुँचना और रात साढे ग्यारह बजे फैक्ट्री से छूटने पर गुड़गाँव आदि लौटना असम्भव है। मैनेजमेन्ट यह जानती है और यह भी जानती थी कि मजदूर विरोध करेंगे। यूनियन ने एक की जगह अनेक शिफ्ट करने का विरोध नहीं किया पर शिफ्टों के समय बदलने की माँग रखी। कम्पनी ने अनसुना कर दिया। मजदूर पहले की ही तरह 17 सितम्बर को फैक्ट्री पहुँचे तो मैनेजमेन्ट ने पुलिस का इस्तेमाल कर मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। यूनियन के नेतृत्व में फैक्ट्री गेट पर धरना आरम्भ। प्रबन्धकों ने 19 अक्टूबर को 52 मजदूरों को डिसमिस कर दिया – डोमेस्टिक इनक्वायरी भी नहीं की, डाइरेक्ट डिसमिस कर दिया। मैनेजमेन्ट ने तोड़- फोड़ का चक्कर चलाया और 23 नवम्बर को यूनियन को पत्र में लिखा कि 17 सितम्बर से मजदूर नई शिफ्टों अनुसार कार्य कर रहे हैं तथा इस सन्दर्भ में मजदूरों की तरफ से कोई विवाद नहीं है। यूनियन ने दिल्ली सरकार के श्रम विभाग में शिकायतें की हैं। केस सहायक श्रम आयुक्त के यहाँ से लेबर कमीश्नर के यहाँ पहुँच गया है। यूनियन ने शारदा मोटर इन्डस्ट्रीज के खिलाफ संयुक्त संघर्ष का आहवान किया है।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

**RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।